इकाई 17 सल्तनत कालीन शासक वर्ग का संघटन

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

इकाई 16 में आपने दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन किया। इस इकाई में सल्तनत के शासक वर्ग का विश्लेषण करेंगे। इस इकाई से आप निम्न के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे:

- राज्य द्वारा अधिशेष या अतिरिक्त धन पर अधिकार करने में शासक वर्ग की भूमिका,
- शासक वर्ग का संघटन,
- शासक वर्ग में परिवर्तन; और
- वे स्वार्थ, जो इन्हें एकजुट रखते थे।

17.1 प्रस्तावना

अपनी स्थापना के प्रारंभिक दौर और आगे के काल में भी सल्तनत की सर्वाधिक गंभीर समस्या जीते हुए प्रदेशों को संघटित करने की थी। इस उद्देश्य की प्राप्ति में शासक वर्ग ने धुरी के रूप में कार्य किया। संसाधनों पर इस वर्ग का संयुक्त स्वामित्व था। तुर्क अपने साथ **इक्ता** नामक व्यवस्था लाए (देखिए इकाई 16, भाग 16.6), जिसने काफी हद तक केंद्रीकरण में सहायता की। जब अधिक केंद्रीकरण की चेष्टा की गई तो **इक्ता** व्यवस्था और शासक वर्ग के संयोजन में कई परिवर्तन आए।

17.2 गौरी के आक्रमण के समय शासक वर्ग

(मुहम्मद) गौरी के आक्रमण के समय उत्तर भारत छोटे-छोटे अनेक ऐसे राज्यों में बंटा हुआ था, जिन पर **राय** और **राना** (स्थानीय राजा) शासन कर रहे थे। गांव के स्तर पर **खोत** और **मुकद्दम** (ग्राम प्रमुख) ग्रामीण अभिजात वर्ग थे। इन दोनों के बीच (**राय**, **राना** और **खोत**, **मुकद्दम**) **चौधरी** को माना जा सकता है, जो 100 गांवों का प्रमुख था।

कुल मिलाकर गौरी के आक्रमण से पूर्व के शासक वर्ग उस वर्ग के रूप में परिभाषित किए जा

अधिकार करता था। यह वर्ग किसानों के अधिशेष पर अधिकार करने के लिए भूमि पर अपने उच्च अधिकारों का दावा करते थे। सल्तनत के शासक वर्ग के संघटन का विश्लेषण करने में इससे जुड़े कई प्रश्न सामने आते हैं: पुराने शासक वर्ग को किस प्रकार हटाकर नए शासक वर्ग ने उसका स्थान ले लिया? इस वर्ग (नए शासक वर्ग) ने अधिशेष पर अधिकार करने के लिए कौन-से तरीके अपनाए? यह वर्ग पुराने हटाए गए शासक वर्ग से किस प्रकार भिन्न था?

17.3 शासक वर्ग की संरचना

लगभग सम्पूर्ण तेरहवीं शताब्दी में तुर्की सैन्य शक्ति ने उत्तर भारत पर नियंत्रण स्थापित किया। चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक इसका विस्तार दक्कन में भी हो गया। अब एक विशाल प्रतिकूल क्षेत्र को शांत रखना और शासित करना था। इस कार्य के लिए एक शासक वर्ग को बनाए और जारी रखना था। प्रारंभिक तुर्की शासक वर्ग का राजनीतिक और वित्तीय सत्ता पर अधिकार का स्वरूप सुल्तान के साथ हिस्सेदारी का था। प्रारंभिक काल में दूर-दराज के नवविजित प्रांतों में भेजे गए **अमीर** लगभग पूर्ण स्वतंत्र थे। यह **अमीर** या कुलीन इन प्रदेशों में गवर्नर के रूप में भेजे जाते थे। यह **अमीर मुक्ती** या **वली** कहलाते थे और इनके अधीन प्रदेश को **इक्ता** कहा जाता था। समय के साथ, **मुक्तियों** को एक **इक्ते** से दूसरे **इक्ते** में स्थानांतरित करने की प्रथा प्रारंभ हुई (**इक्ता** पर विस्तृत चर्चा इकाई 16 में की जा चुकी है)। संभवत: गौरी के आक्रमण से पूर्व की राजनीतिक व्यवस्था जारी रही। इस व्यवस्था में **राय** और **रानाओं** से अंशदान या निश्चित राशि मांगी जाती थी तथा इनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि पहले की भांति ही कर वसूल करें।

समकालीन इतिहासकार मिन्हाज-उस सिराज और बर्नी के अनुसार सल्तनत की स्थापना के प्रारंभिक वर्षों में अधिकांश महत्वपूर्ण कुलीन और सुल्तान गुलाम परिवारों से संबंध रखते थे। प्रारंभिक काल के बहुत से तुर्की कुलीन और सुल्तानों ने अपने सैनिक अथवा राजनीतिक जीवन का आरंभ एक गुलाम के रूप में किया था। परन्तु सुल्तान बनने से पहले ही उन्होंने अपना दास्य मुक्ति पत्र (**खत्त-ए आज़ादी**) प्राप्त कर लिया था। ऐसा ही एक सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक था। सन् 1210 में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके एक कृपापात्र इल्तुतमिश ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया। उसने गुलामों का अपना एक दल तैयार किया, जिन्हें **शम्सी मलिक** (शम्सी-शमसुद्दीन इल्तुतमिश के नाम पर) कहा गया। बर्नी इन्हें **तुरकान-ए-चिहिलगानी** (चालीस का दल) कहता है। इल्तुतमिश के अमीरों में बहुत से **ताजिक** या जन्म से स्वतंत्र (गुलाम के विपरीत) अधिकारी भी थे। मिन्हाज-उस सिराज के अनुसार, नासिरूद्दीन महमूद के सिंहासनारोहण के समय (1246 ई.) शासक वर्ग में अप्रवासी (बाहर से आए हुए) स्वतंत्र **अमीर** भी थे। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के संघर्ष ने **अमीरों** के मतभेदों को उजागर किया।

शासक वर्ग में आपसी मतभेदों के बावजूद इनमें एक बुनियादी भाईचारा था, जिसकी झलक इस वर्ग से बाहर के व्यक्तियों के विरुद्ध शत्रुता में दिखाई देती है। रज़िया (1236–1240 ई.) ने जब एक हब्शी (एबीसीनियन) गुलाम जमालुद्दीन याकूत को **अमीर-ए आखुर** ("शाही घोड़ों के विभाग का प्रधान") का पद दिया तो अत्यधिक असंतोष उभरा। इसी प्रकार का विरोध इमादउद्दीन रेहान (सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद के काल में) को एक महत्वपूर्ण पद देने का हुआ, क्योंकि वह एक हिन्दू था, जो धर्म-परिवर्तित करके मुसलमान हो गया था। इस प्रकार, कुलीन होना या शासक वर्ग में स्थान कुछ विशेष वर्गों का विशेषाधिकार समझा जाता था। कभी-कभी यह कार्य "कुलीन जन्म" के सिद्धांत के आधार पर किया जाता था, जैसा कि बलबन की नीतियों से दिखाई देता है। **बर्नी** इन नीतियों का श्रेय बलबन को देता है।

अब आप समझ सकते हैं कि समान हितों के कारण कैसे प्रभावशाली गुट एकजुट रहते थे। शासक वर्ग की संरचना में प्रजाति और संभवत: धर्म भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। वास्तव में, शासक वर्ग एक एकाश्म या समरूपी संगठन नहीं था। इसके कई तरह के दल और गुट थे तथा प्रत्येक गुट ईर्ष्यापूर्वक अपने विशेष हितों की रक्षा करता था। गौरी के आक्रमण के समय जो तुर्की अधिकारी या सेना नायक उसके साथ थे, वे प्रारंभिक तुर्की शासक वर्ग के केन्द्र में थे:

17.3.1 इलबरी

मुहम्मद गौरी द्वारा विजित भारतीय क्षेत्रों पर कुतुबुद्दीन ऐबक ने अधिकार प्राप्त किया। इन क्षेत्रों पर उत्ताराधिकार प्राप्त करने का ऐबक को उतना ही अधिकार था, जितना यलदूज़ या कुबाचा जैसे **अमीरों** को था जिन्होंने क्रमश: ग़ज़ना और सिंध पर अपनी स्वतंत्रता और स्वायत्तता घोषित की। यही सल्तनत के प्रारंभिक इतिहास की विशेषता रही। स्वयं को सिंहासनारूढ़ करने और सत्ता में बने रहने के लिए सुल्तान को **अमीरों** के समर्थन की आवश्यकता रहती थी। उदाहरण के लिए, इल्तुतमिश ने दिल्ली के अमीरों की सहायता से सिंहासन पर अधिकार किया। सिंहासन प्राप्त करने के प्रयासों में अथवा सुल्तान बनाने में तुर्की **अमीरों** की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती थी। **बर्नी** के अनुसार, अनुभवी तुर्की **अमीर** एक-दूसरे से कहते थे कि "तुम क्या हो जो मैं नहीं हूँ और तुम क्या बनोगे जो मैं नहीं बन सकूँगा"।

प्रारंभिक तुर्की कुलीन वर्ग शासन करने के अपने विशिष्ट एकाधिकार पर बहुत अधिक बल देते थे। उनके इस एकाधिकार को जब अन्य सामाजिक दल चुनौती देते थे तो यह वर्ग नाराज़ हो जाता था और वे उसका विरोध करते थे। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसके **अमीरों** के दल **तुर्कान-ए-चिहिलगानी** ("चालीस का दल") के हाथ में काफी शक्ति आ गई। यह वर्ग काफी महत्वपूर्ण था। जब सुल्तानों ने अन्य दलों को सत्ता में भागीदार बनाने का प्रयास किया, तो इस गुट ने तीव्र विरोध किया। आप जानते ही हैं कि जब रज़िया ने एबीसीनिया के एक गुलाम याकूत को **अमीर-ए आखुर** का पद दिया तो तुर्की **अमीरों** ने विरोध किया। जब नासिरूद्दीन महमूद (1246–1266 ई.) ने इस गुट की शक्ति का दमन करने के लिए बलबन (जो चालीस के गुट में था) को महत्वपूर्ण पद से हटाकर इमादउद्दीन रेहान, जो एक धर्म-परिवर्तित मुस्लिम था, को उसके स्थान पर बैठाया तो सफलता नहीं मिली। समकालीन इतिहासकार मिन्हाज "शुद्ध नस्ल के तुर्को" का पक्ष लेते हुए कहता है कि वह "हिन्दुस्तान की प्रजाति के इमादउद्दीन रेहान का अपने ऊपर शासन करना कैसे सहन कर सकते थे।" तुर्की **अमीर** वर्ग के विरोध के सामने असमर्थ सुल्तान ने रेहान को हटाकर बलबन को पुनर्स्थापित कर दिया।

जब बलबन स्वयं सुल्तान बना (1266–1286 ई.) तो उसने **तुर्कान-ए-चिहिलगानी** की शक्ति का दमन करने के लिए कई कदम उठाए। वह स्वयं ऐसे **अमीरों** की सहायता से सत्ता में आया था, जो उसके प्रति वफादार थे। बर्नी के अनुसार, बलबन ने अनेक वरिष्ठ तुर्की **अमीरों** की हत्या कराई। यह उन तुर्की **अमीरों** को, जो सुल्तान को चुनौती दे सकते थे, भयभीत करने का प्रयास था। बर्नी के अनुसार, बलबन ने स्वयं सुल्तान नासिरूद्दीन को अपनी "कठपुतली" (**नमूना**) बनाकर रखा था। इसलिए वह अग्रणी तुर्की **अमीरों** के प्रति सशंकित था।

17.3.2 खलजी

सन् 1290 ई. में खलजी वंश ने इलबरी वंश को उखाड़ फेंका। खलजियों का सत्ता में आना समकालीन इतिहासकारों के लिए एक बिल्कुल नई बात थी। बर्नी कहता है कि खलजी तुर्कों से भिन्न एक अलग "नस्ल" के थे। सी. ई. बोसवर्थ जैसे आधुनिक इतिहासकार उन्हें तुर्क ही मानते हैं, परन्तु तेरहवीं शताब्दी में उन्हें कोई तुर्क नहीं मानता था। इसलिए उनका सत्ता में आना एक विलक्षण और नवीन घटना के रूप में देखा गया, क्योंकि वह **अमीर** और शासक वर्ग के महत्वपूर्ण अंग नहीं थे। अलाउद्दीन खलजी ने तुर्की **अमीरों** की शक्ति का अंत करने के लिए अपने कुलीन या **अमीर** वर्ग में नए लोगों को सम्मिलित किया। इनमें प्रमुख थे मंगोल (नव या नए मुस्लिम), भारतीय और एबीसीनियावासी (मलिक काफूर एबीसीनियाई वर्ग का सुप्रसिद्ध उदाहरण है) **अमीर** वर्ग की संरचना में विस्तार की यह प्रक्रिया तुगलक वंश के काल में भी जारी रही।

प्रसंगवश हम यहाँ यह बता दें कि अलाउद्दीन खलजी और बलबन के काल में दिल्ली में **कोतवालियान** (**कोतवाल** का बहुवचन) नामक **अमीरों** का एक छोटा सा गुट था। वास्तव में, यह एक परिवार का गुट था, जिसका प्रमुख दिल्ली का **कोतवाल** फखरूद्दीन था। ऐसा प्रतीत

17.3.3 तुगलक

मुहम्मद तुगलक के काल में भारतीय और अफगान **अमीरों के प्रवेश के** अतिरिक्त अमीर **वर्ग में अभूतपूर्व विषमता आ गई। इसमें काफी संख्या में विदेशी तत्व, विशेषकर खुरासानी, सम्मिलित हो गए जिन्हें सुल्तान अइज़्ज़ा (प्रिय) कहता था। इनमें से बहुत से अमीर सादह ("एक सौ के नायक") के रूप में नियुक्त किए** गए। **बर्नी इस बात के लिए शोक प्रकट करता है कि सुल्तान ने "निम्न कुल में** जन्मे" **(जवाहर-ए लुतरह) व्यक्तियों को ऊंचे पद प्रदान कर** दिए **है। वह कहता है कि गाने-बजाने वाले,** नाई **और रसोइयों को उच्च पद दे दिए गए। वह नामों के साथ कुछ** उदाहरण देता **है जैसे** पीरा माली **को दीवान-ए विज़ारत दिया गया। धर्म (इस्लाम) में नए परिवर्तित** अज़ीज़उद्दीन **खम्मार (अर्क निकालने वाला या आसवक) और कवामुल मुल्क मकबूल, तथा मलिक मख और मलिक साहू लोदी** अफगान **जैसे अफगानों;** और साई राज धारा तथा भीरन राम जैसे हिन्दुओं को **इक्ता** और पद दिए गए।

फीरोज़ तुगलक के काल में कुलीनों की सामाजिक पृष्ठभूमि के विषय में कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलते। ऊपरी तौर पर सुल्तान और अमीरों के बीच अस्थिर शांति प्रतीत होती है।

अमीरों के लिए **खान**, **मलिक** और **अमीर** जैसे पदनामों का प्रयोग किया जाता था। अफगान कुलीनों के लिए बहुधा **खान** पदनाम प्रयोग किया जाता था, **अमीर** का तात्पर्य नायक से था; **मलिक** का उपयोग राजा, शासक या प्रधान के अर्थ में होता था। सम्मान सूचक उपाधियों के अतिरिक्त **अमीरों** को कुछ वैभव तथा सम्मान के प्रतीक चिन्ह भी दिए जाते थे, जिन्हें **मरातिब** कहते थे और जो **अमीरों** के विशेषाधिकार के प्रतीक थे। जैसे — **खिलत** (सम्मान सूचक वस्त्र), सुल्तान द्वारा तलवार या कटार भेंट करना, शोभा यात्रा में घोड़े और हाथी प्रयोग करने का अधिकार, राजचिन्ह-युक्त छतरी, राजचिन्ह धारण करने और नगाड़ा तथा नक्कारा बजाने का अधिकार।

यह तथ्य विशेष ध्यान देने योग्य है कि प्रत्येक सुल्तान **अमीरों** का एक ऐसा गुट संगठित करने का प्रयास करता था, जो स्वयं उसके प्रति वफादार हो। इस नीति के द्वारा सुल्तान को पहले से मौजूद उस **अमीर** वर्ग पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रहती थी जिसकी वफादारी संदेहास्पद होती थी। समकालीन इतिहासकारों के विवरणों में हमें इसीलिए **अमीरों** के संदर्भ कुतुबी (कुतुबुद्दीन ऐबक के), शम्सी (शमसुद्दीन इल्तुतमिश के), बलबनी (बलबन के) और अलाई (अलाउद्दीन खलजी के) **अमीरों** के रूप में मिलते हैं। यहाँ यह स्पष्ट करना प्रासंगिक होगा कि चाहे सुल्तान शक्तिशाली हो या कमज़ोर, **अमीरों** का प्रत्येक गुट उसकी कृपा-दृष्टि प्राप्त करने का भरसक प्रयास करता था क्योंकि सभी विशेषाधिकार और शक्तियों का स्रोत सुल्तान ही था। अगर सुल्तान दृढ़ इच्छा शक्ति का स्वामी होता था तो उसकी यह स्थिति उसकी सत्ता को मज़बूत करने में बहुत सहायक सिद्ध होती थी।

दिल्ली सल्तनत के इस सामंती अधिकारी वर्ग में अफगान काफी संख्या में शामिल रहते थे। लोदी वंश (1451–1526 ई.) के सत्ता में आने से **अमीर** वर्ग में अफगानों की प्रधानता स्थापित हो गई।

बोध प्रश्न 1

1) इल्बरी शासकों के काल में शासक वर्ग की संरचना का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) खलजी और तुगलक शासकों के समय में अमीर वर्ग के संघटन एवं संरचना में क्या परिवर्तन आए ?

....

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

3) निम्न कथनों के समक्ष सही (✓) या गलत (×) का निशान लगाइए:
   - **क) तेरहवीं शताब्दी में तुर्की अमीरों को वेतन नकद धन के रूप में मिलता था।**
   - **ख) मुहम्मद तुगलक ने अपने अमीर वर्ग में विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को सम्मिलित किया।**
   - **ग) बर्नी खलजियों को तुर्क** मानता **है।**

17.4 इक्ता और शासक वर्ग में संसाधनों का वितरण

इकाई 16 में आप **इक्ता** व्यवस्था, इस्लामी विश्व में इसका आरंभिक इतिहास और भारत में उसके प्रयोग के विषय में अध्ययन कर चुके हैं। सल्तनत की आय का प्रमुख साधन था भूमिकर। जिस भूमि की आय सुल्तान के लिए सुरक्षित रहती थी, उसे **ख़ालिसा** कहा जाता था। **इक्ता** वह भू-भाग था, जिसकी आय अमीरों को अनुदान में दी जाती थी **मुक्ती** अथवा **इक्ता**-धारकों को अपने क्षेत्र से भू-राजस्व जमा करना होता था और वहां कानून व्यवस्था बनाए रखनी होती थी। साथ ही साथ, आवश्यकता पड़ने पर इन लोगों को सुल्तान के लिए सैनिक सहायता की व्यवस्था भी करनी होती थी।

यह राजस्व या भूमि अनुदान स्थानांतरणीय थे और वंशानुगत नहीं होते थे। वास्तव में, **इक्ता** व्यवस्था द्वारा ही सुल्तान अमीरों पर अपना नियंत्रण स्थापित करता था। **मुक्ती** अपने क्षेत्र के किसानों से भू-राजस्व वसूल करने के पश्चात उसमें से स्वयं अपना और अपने सैनिकों का वेतन ले लेता था। अतिरिक्त या बचे हुए धन **(फवाज़िल)** क़ो **दीवान-ए विज़ारत** में भेजना केंद्रीकरण का द्योतक था। **मुक्ती** को अपनी आय और व्यय का विवरण भी केन्द्रीय कोषागार को भेजना होता था। धोखाधड़ी रोकने के लिए कठोर लेखा-परीक्षण किया जाता था।

अलाउद्दीन खलजी ने अपने अमीरों पर नियंत्रण रखने के लिए कई कदम उठाए। **बरीदों** (गुप्तचर अधिकारी) के नियमित विवरण (या रिपोर्ट) द्वारा सुल्तान को अमीरों की गतिविधियों की सूचना प्राप्त होती रहती थी। उनके आपसी मेल-मिलाप पर भी नज़र रखी जाती थी। अमीरों और उनके परिवारों के बीच आपसी वैवाहिक संबंध स्थापित करने के लिए भी सुल्तान की अनुमति लेना आवश्यक था। राज्य के इन उपायों को बार-बार होने वाले विद्रोहों की पृष्ठभूमि में देखना होगा। अपने-अपने क्षेत्रों के संसाधनों का दुरुपयोग करके **मुक्ती** विद्रोह करते थे या सिंहासन पर अधिकार करने की चेष्टा करते थे। इसी कारण से **इक्तों** का स्थानांतरण भी युक्तिसंगत माना जा सकता है। मुहम्मद तुगलक के काल में (1325–1351 ई.) अमीरों को तो नकद वेतन के बदले में **इक्ता** दिया जाता था, परन्तु पूर्व व्यवस्था के विपरीत उनके सैनिकों के वेतन का वितरण कोषागार से नकद धन के रूप में किया जाता था। यह नई वित्तीय व्यवस्था और **इक्ता** अनुदानों पर बढ़ा हुआ नियंत्रण ही संभवत: सुल्तान और अमीरों के बीच संघर्ष का कारण बना क्योंकि इस नई व्यवस्था के कारण अमीरों को **इक्ता** से होने वाले अनेकों लाभों से हाथ धोना पड़ा। परन्तु फीरोज़ तुगलक के काल में राज्य की नीति में बदलाव आया और **इक्ता** पर केन्द्रीय नियंत्रण में ढील दी गई। यहाँ तक कि फीरोज़ ने **इक्ता**-धारकों की मृत्यु के बाद उनके पुत्रों और वंशजों को **इक्ता** देने की परम्परा आरंभ की। तुलनात्मक दृष्टि से फीरोज़ तुगलक के लम्बे शासन काल में बहुत कम विद्रोह हुए, परन्तु इसी काल में राज्य का विकेंद्रीकरण और बिखराव भी शुरू हुआ। लोदी वंश (1451–1526 ई.) के काल तक **इक्ता**-धारकों (इन्हें अब **वजहदार** कहा जाता था) का स्थानांतरण अथवा बदली करने की प्रथा समाप्त हो गई।

17.5 उलेमा

सल्तनत में **उलेमा** अथवा धार्मिक वर्ग का महत्वपूर्ण स्थान था। महत्वपूर्ण वैधानिक और न्यायिक पदों पर नियुक्ति इसी वर्ग से की जाती थी। इनमें प्रमुख थे: **सद्र**, **शेख-उल इस्लाम**, **काज़ी**, **मुफ्ती**, **मुहतसिब**, इमाम तथा **खतीब**। उलेमा को शासक वर्गों का ही एक अंग माना जा सकता है। इस वर्ग के रख-रखाव के लिए भी सुल्तान द्वारा कर मुक्त भूमि अनुदान दिए जाते थे। बहुधा यह अनुदान अमीर वर्ग द्वारा भी दिये जाते थे। वैचारिक व सैद्धांतिक धरातल पर **उलेमा** का महत्व काफी अधिक था, क्योंकि यह शासक वर्ग की पद और स्थिति की न्यायसंगति अथवा औचित्य प्रमाणित करते थे। यह एक ऐसा प्रभाव रखते थे जो केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि कई बार राजनीतिक भी होता था।

बोध प्रश्न 2

1) **इक्ता व्यवस्था** की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

i) ....

....

....

ii) ....

....

....

2) अमीर वर्ग को नियंत्रित करने के लिए अलाउद्दीन खलजी ने क्या नीतियाँ अपनाई ?

....

....

....

....

....

....

3) निम्न वक्तव्यों के समक्ष सही (✓) या गलत (X) का निशान लगाइए:

क) i) **इक्ता** वंशानुगत अनुदान थे।

ii) **इक्ता** अमीरों की व्यक्तिगत सम्पत्ति होते थे।

iii) सामान्यत: **इक्ता** स्थानांतरणीय राजस्व अनुदान होते थे।

ख) i) **मुक्ती** सुल्तान के व्यक्तिगत अंगरक्षक होते थे।

ii) **मुक्ती** धार्मिक शिक्षा देते थे।

iii) **मुक्ती** प्रांतीय गवर्नर होते थे, जिन्हें **इक्ता** अनुदान दिए जाते थे।

ग) **फवाज़िल**

i) अमीरों को दिया जाने वाला अतिरिक्त धन था।

ii) वह अतिरिक्त आय थी, जो **इक्ता-धारकों** द्वारा कोषागार में जमा की जाती थी।

iii) नकद वेतन के स्थान पर दिया जाने वाला राजस्व अनुदान था।

17.6 सारांश

अपने से पहले के सभी शासक वर्गों से भिन्न था। प्रारंभ में इसने मुख्य रूप से अपना विदेशी (तुर्की) चरित्र बनाए रखा, परन्तु धीरे-धीरे सम्मिश्रण की प्रक्रिया बढ़ती गई। सुल्तानों ने भी विभिन्न सामाजिक वर्गों से अमीरों को लेना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार अमीर वर्ग की प्रकृति और चरित्र विस्तृत होता गया। इसमें केवल तुर्क ही नहीं, बल्कि भारतीय मुसलमान, गैर-मुस्लिम और विदेशी (एबीसीनिया वासी) भी सम्मिलित हो गए। **उलेमा** वर्ग को भी शासक वर्ग का एक अंग माना जा सकता है। इनके रख-रखाव के लिए भी राज्य द्वारा कर मुक्त राजस्व अनुदान अथवा **वज़ीफा** (नकद) मिलता था।

17.7 शब्दावली

अमीर-ए आखुर: शाही अस्तबल/घोड़ों का प्रमुख

अमीर-ए सादह: "शतपति", एक सौ का नायक

खत-ए आज़ादी: दास मुक्ति-पत्र

ताजिक: एक प्रजाति/स्वतंत्र पैदा हुए अमीर (जो जन्म से गुलाम नहीं हों)

तुर्कान-ए चिहिलगानी: "चालीस का दल" (इल्तुतमिश के तुर्की अमीरों का समूह)

उलेमा: धर्मशास्त्री

वजहदार: वेतनभोगी कर्मचारी/इक्ता-धारक।

17.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 17.3.1 देखिए।
2) उपभाग 17.3.2 और उपभाग 17.3.3 देखिए।
3) क) ×, ख) ✓, ग) ×

बोध प्रश्न 2

1) भाग 17.4 देखिए।
2) भाग 17.4 देखिए।
3) क) (i) ×, (ii) ×, (iii) ✓
   ख) (i) ×, (ii) ×, (iii) ✓
   ग) (i) ×, (ii) ✓, (iii) ×